# स्त्रियों की स्थिति के सुधार में शिक्षा का योगदान

शिक्षा किसी भी सभ्य समाज का मापक होता है। विशेष रूप से स्त्रियों की स्थिति तथा समाज की प्रगति का आकलन इसी रूप में किया जाता है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ 'सीखना' होता है और यह सीखने की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। यह प्रक्रिया घर, बाहर तथा विद्यालय आदि स्थानों पर संपन्न होती है। शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक अभिकरणों द्वारा सीखने की प्रक्रिया संपन्न होती है।

शिक्षा का मतलब सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं है बल्कि व्यावहारिक ज्ञान तथा जीवन को बेहतर बनाने के साथ-साथ अज्ञानता को भी समाप्त करती है। समाज तथा परिवार तब तक शिक्षित नहीं हो सकती जब तक स्त्रियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं होगी।

महात्मा गाँधी के अनुसार एक पुरुष यदि शिक्षित होता है तो वह स्वयं शिक्षित होता है लेकिन यदि एक स्त्री शिक्षित होती है तो उसका संपूर्ण परिवार शिक्षित होता है।

इस प्रकार स्त्रियों की स्थिति में सुधार का अनुमान शिक्षा के द्वारा ही लगाया जा सकता है। स्त्रियों की शिक्षा के लिये प्राचीन काल से ही प्रयास

Scanned with CamScanner

किये जा रहे हैं। प्रगुरत विचारकों, समाज सेवियों और दार्शनिकों तथा भारतीय संविधान में स्त्रियों की स्थिति के सुधार के लिये प्रयत्न किये गये हैं। स्त्री को समाज का आधार तथा पुरुष की सहचारी मानी जाती है। इस सृष्टि के निर्माण में स्त्री का योगदान बराबर का होता है फिर भी स्त्री तथा पुरुषों के बीच भेदभाव रखा जाता है। स्त्रियाँ परिवार को सँभालने, लालन-पालन, खान-पान आदि का उत्तरदायित्व निभाती हैं।

स्त्रियों का बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान देखा जाता है। स्त्रीयाँ माता, बहन, पत्नी इत्यादि विभिन्न रूपों में अपनी भूमिकाएँ निभाती हैं तथा परिवार को एक सूत्र में जोड़ने का कार्य करती हैं समाज की कुरीतियों तथा अंधविश्वासों की समाप्ति तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार आदि कार्यों में भी अपनी योगदान देती हैं। स्त्रियों को संवेदना, ममता तथा परोपकार की प्रतिमूर्ति माना जाता है।

स्त्रियाँ समाज का अभिन्न अंग रही हैं। यह धैर्यशील, क्षमा तथा प्रेम की साक्षात प्रतिमूर्ति मानी जाती हैं लेकिन यह विडम्बना है कि कभी उसे विलास के रूप में तो कभी अबला, कभी शक्ति तो कभी शृंगार की वस्तु बनकर रह गयी हैं।

प्राचीन काल में समाज में वर्णाश्रम व्यवस्था प्रचलित थी जिसमें समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में विभाजित था। इस चतुर्वर्णों में से शूद्र को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया तथा अन्य तीनों वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार दिया गया। इन तीनों वर्णों की स्त्रीयों को भी शिक्षा प्राप्ति का अधिकार था साथ ही सहशिक्षा का भी प्रचलन था।

शिक्षा के बावजूद सामाजिक आर्थिक धार्मिक तथा राजनैतिक सहभागिता का अधिकार भी दिया गया था। वे पुरुषों के समान धार्मिक क्रियाओं में भी भाग लेती थी। युद्धक्षेत्र में भी जाकर अपना कौशल प्रदर्शित करती थी। प्राचीन काल की विदुषी महिलाओं में गार्गी, घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, उर्वशी, मैत्रेयी, अनुसुइया आदि प्रमुख थी। कुछ विदुषियों ने तो वेदमंत्रों की रचना भी की।

उत्तर वैदिक काल के आने से स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आया क्योंकि भारतीय संस्कृतियों का संपर्क अन्य संस्कृतियों से हुआ। जिसके फलस्वरूप उनकी स्थिति में विचलन आने लगा तथा उनपर सामाजिक प्रतिबन्ध लगा दिये गये। बौद्ध कालीन शिक्षा का विकास भी प्राचीन काल में हुआ था। बौद्धकालीन शिक्षा के विकास का श्रेय महात्मा बुद्ध को जाता है। महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के पश्चात घूम-घूमकर अपनी शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार किया। शुरुआती दौड़

Scanned with CamScanner

ने उन्होंने बौद्ध संघों में स्त्रियों को दूर रखा परंतु बाद अपनी मौसी तथा बौद्ध भिक्षुणी महामाया गौतमी के कहने पर संघ में स्त्रियों को भी शिक्षा की अनुमति मिल गई। इस तरह प्राचीन काल से आधुनिक काल तथा समाज की आवश्यकताओं में परिवर्तन आया है। अब स्त्रियाँ अपने अधिकारों के साथ-साथ अपनी रुचियों तथा आर्थिक सशक्तीकरण के लिए शिक्षा ग्रहण कर रही है। राष्ट्र की प्रगति तथा सामाजिक उत्थान में भी स्त्रियों की भागीदारी बढ़ी है। स्त्रियाँ सामाजिक परिवर्तन में प्रमुख भूमिका निभा रही है।

समाज एक गतिशील व्यवस्था है। यहाँ परिवर्तन निरंतर होता रहता है। पहले समाज में रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का प्रचलन अधिक था। जिसकी वजह से स्त्रीयों को अनेकों कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। जिससे सामाजिक गतिशीलता अवरुद्ध हो रही थी लेकिन समाज सुधारकों तथा सरकारों द्वारा सामाजिक पिछड़ेपन को समाप्त करने का प्रयास किया गया और इस तरह स्त्रीयों का योगदान धीरे-धीरे हर क्षेत्रों में देखी जाने लगी। स्त्री शिक्षा के बिना राष्ट्रीय एकता और विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है।

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि स्त्री शिक्षा की वर्तमान में आवश्यकता अत्यधिक है क्योंकि स्त्रियों को अनदेखी करके और उनको पुरुषों की अपेक्षा

Scanned with CamScanner

निम्न स्थान देने से किसी भी सभ्य समाज की स्थापना नहीं हो सकती है। इस तरह स्त्री शिक्षा के प्रतिमानों को आगे बढ़ाने के लिये समाज तथा राष्ट्र दोनों को जागरूक होना जरूरी है।

Scanned with CamScanner